उँ भास्कराय विद्यमहे महादिप्ती काराय धिमही तन्नो आदित्यः प्रचोदयात।।

पंचमहापुरुष योग

1. रुचक योग- मंगल केन्द्र में मेष, वृश्चिक या मकर राशि के अर्न्तगत हो तो रुचक योग बनता है।

   फल- व्यक्ति साहसी बली व शस्त्र बल का मुखिया यानी सेना में होता है। ये पराक्रमी और सुखी होते हैं।

2. भद्रयोग- बुध केन्द्र में मिथुन या कन्या राशि में बुध स्थित हो तो भद्रयोग बनता हैं।

   फल- व्यक्ति गणितज्ञ, सुन्दर ृशरीर वाला, हाथ पैर में कोई ृशुभ निशान, सुन्दर वाणी, बुद्धिमान ृशास्त्रो का ज्ञाता होता हैं।

3. हंस योग- गुरु केन्द्र में कर्क, धनु या मीन राशि में हो तो हंस योग का निर्माण होता है।

   फल- व्यक्ति ज्ञानवान, सतत अध्ययनरत, सुन्दर व्यक्तित्व वाला, कामी व सुन्दर पैर होता हैं।

4. मालव्य योग- शुक्र केन्द्र में वृष, तुला या मीन राशि मे हो तो मालव्य योग बनता हैं।

   फल- व्यक्ति संगीत कला का प्रमी तथा इस क्षेत्र में निपुण ये धैर्यवान, स्थूल शरीर वाले बाहन का सुख दुबले-पतले होठ वाला सुन्दर होगा।

5. शशक योग- शनि केन्द्र में तुला, मकर या कुम्भ राशि में हो तो ृशशक योग बनता है।

   फल- व्यक्ति अचलसम्पत्ति वाला, बलवान व धनवान क्रोधी मगर आचरण उत्तम नही होगा। यह चंचल स्वभाव का मातृभक्त, दूसरे का धन लेने वाला होता हैं।

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता। तां देवी प्रेषयासु त्वं मदगृहे ते नमो नमः।।

राजयोग .लक्ष्मीनारायण योग

लक्ष्मी स्थानं त्रिकोंणं स्यात विष्णु स्थानं तु केन्द्रकम्।

तयोः सम्बन्ध मात्रेण राज्य श्रीर्लभते नरः।।

(वृहदपराशर होराशास्त)

अर्थात- यदि जन्म कुण्डली में विष्णु केंन्द्र तथा लक्ष्मी स्थान त्रिकोण का संबंध हो तो व्यक्ति राज्य श्री अथवा उच्च पद प्राप्त करता हैं। जिसे महालक्ष्मी योग या लक्ष्मी नारायण योग कहा जाता है।

यह संबंध युति, राशि परिवर्तन, नक्षत्र परिवर्तन का होना चाहिए। इसके अतिरिक्त इन दोंनो में सम्बन्ध ृशुभ भाव में होना चाहिए 6 8 12 वें भाव में नहीं होनी चाहिए तथा उक्त ग्रह बलवान हो अस्त या वक्री न हो पाप कर्तरियो में न पड़ा हो अथवा षष्ठेश अष्टमेश या द्वादशेश से युत अथवा ृशुभ ग्रह हो या ृशुभ ग्रह की राशि हो अथवा ृशुभ ग्रह की दृष्टि हो, दशमभाव का स्वामी षष्ठ, अष्ठम या द्वादश भाव में न होकर केन्द्र- त्रिकोण या उच्च राशि में हो दशम भाव का कारण ग्रह प्रबल हो, तथा लग्न भाव भी प्रबल होना चाहिए।

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवाय धन धान्यादि पतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।।

चमत्कारिक फलादेश के मानक सूत्र

- लग्न या अन्य किसी भाव में क्रम से ग्रह स्थित हो तो इस प्रकार का योग राजयोगकारी होता है।
- जिस ग्रह की महा दशा हो उससे छठे या आठवें स्थान में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा स्थानच्युति, रोग, कष्ट या मृत्युकारी होती हैं।
- गुरु, चन्द्रमा, सूर्य या मंगल के साथ विद्यमान राहू (यदा कदा केतु) खतरनाक फल देता है।
- शनि व गुरु की युति हो तो व्यक्ति न्यायधीश या पुलिस अधिकारी होता हैं यह यशस्वी मगर कष्ट देने वाला होगा।
- बुध दशवें स्थान में हो तो व्यक्ति विद्या व कला से धन अर्जित करता हैं।
- चन्द्रमा से दशम स्थान में मंगल और शुक्र हो तो ऐसा व्यक्ति विदेश में अपने कारोबार को बढ़ाता है।
- चन्द्र पर राहु-केतु को छोड़कर अन्य सब ग्रहों की दृष्टि हो तो व्यक्ति उच्च राज्याधिकारी होता है।

- पाप ग्रहों की महादशा मे ृशुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो उस अन्तर्दशा का पहला आधाभाग कष्टदायक एवं बाकि आधा भाग सुखदायक होता है।
- ृशुभ ग्रहो की महादशा में ृशुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में धनागम, सम्मान वृद्धि, सुखादि प्रदान करती हैं।
- ृशुभ ग्रहों की महादशा मे पाप ग्रहों की अन्तर्दशा में अन्तर्दशा का पुर्वाद्ध सुखदायक एवं उत्तरार्द्ध कष्टदायक।
- मकर एवं कुम्भ में चन्द्रमा हो तो उसकी महादशा मे सप्तमेश की अन्तर्दशा कष्टदायक होती है।
- शनि मे चन्द्रमा और चन्द्रमा मे शनि की अन्तर्दशा आने पर नाना प्रकार के शारिरीक और आर्थिक कष्ट होते है।
- मंगल में शनि और शनि मे मंगल की अन्तर्दशा रोग कारक होती है।
- अष्टम भाव में शनि वक्री हो तो जातक प्रखर, तंत्र सम्राट एवं विद्वान होता है।
- दशम भाव मे शनि वक्री हो तो व्यक्ति उच्च पदासीन, विधिविज्ञ न्यायधीश व प्रखर वकील होता है।
- सप्तम भाव मे शनि वक्री हो तो दाम्पत्य जीवन सुखमय नही होता हैं।
- दशम भाव में वक्री गुरु हो तो व्यक्ति प्रतापी होता है, अर्थात उसके द्वारा उस के परिवार वालो को जाना जाता है।

- लग्नेश एवं सप्तमेश एक दूसरे से युत या दृष्ट हों तो व्यक्ति बहुस्त्रीगामी होता है।
- राहु लग्न मे और लग्नेश दशवें स्थान में हो तो ऐसा जातक पैरो से पैदा होता है।
- मेष लग्न मे पाप ग्रह हो और गुरु भाग्य भाव में हो तो व्यक्ति कैविनेट स्तर का मंत्री होता है।
- चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो या पाप ग्रहों के मध्य पाप कर्तरी हो तथा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो माता की शीघ्र मृत्यु हो जाती हैं।
- मेष लग्न मे उच्च का सूर्य हो तथा नवम स्थान मे गुरु एवं दशम में मंगल हो तो व्यक्ति राज्यपाल होता हैं।
- उच्च का गुरु केन्द्र मे तथा शुक्र दशम भाव में हो तो ऐसा जातक राजनीति मे सफल होता है।
- यदि सातवें एवं दूसरे भाव में नीच ग्रह हो तो ऐसी स्त्री दुसचारणी होती हैं।
- सप्तम भाव पर अष्टमेश की पूर्ण दृष्टि हो तो भी ऐसी स्त्री दुसचारणी होती हैं।
- कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु राशि के लग्न में चन्द्र मंगल से दृष्टि हो तो केश रोग होता है।
- सूर्य पाप ग्रहो के मध्य हो या युत हो तथा सूर्य से सातवें पाप ग्रह हो तो अल्पायु में ही पिता की मृत्यु होती है।
- कुम्भ लग्न में छठे भाव का गुरु प्रचुर धन प्रदान करता है।

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तु नः।।

(यजु0 36/12)

विशेष धन योग

- पंचम भाव में शुक्र स्वराशि का हो व लाभ स्थान में मंगल हो तो विशेष धन योग बनता हैं।
- पंचम भाव में बुध स्वराशि का हो व लाभ स्थान में चन्द्र, मंगल व गुरु हो तो विशेष धन योग बनता है।
- पंचम भाव में सिंह राशि का सूर्य बैठा हो व लाभ स्थान में शनि, चन्द्र और गुरु हो तो विशेष धन योग बनता है।
- पंचम भाव मे शनि, मकर या कुम्भ राशि में हो और एकादश स्थान में सूर्य व चन्द्र हो तो व्यक्ति धनी होता है।
- धनु या मीन का गुरु पंचम भाव में हों और लाभ भाव में बुध हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।
- मेष या वृश्चिक का मंगल पंचम भाव में हो और लाभ भाव में शुक्र हो तो विशेष धन योग होता हैं।

- पंचम भाव में चन्द्रमा कर्क राशि में हो और लाभ भाव में ृशनि बैठा हो तो विशेष धन योग होता हैं।
- सिंह लग्न में सूर्य स्वराशि का हो और उस पर गुरु और मंगल का प्रभाव हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।
- कर्क लग्न में चन्द्रमा हो और उस पर बुध व गुरु का प्रभाव हो तो व्यक्ति धनी होता है।
- मेष या वृश्चिक लग्न का मंगल हो उस पर बुध शुक्र शनि का प्रभाव हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।
- मिथुन या कन्या लग्न में बुध हो और उस पर गुरुत्व शनि का प्रभाव हो तो भी व्यक्ति धनी होता हैं।
- धनु या मीन लग्न का गुरु हो और उस पर बुध, मंगल का प्रभाव हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।
- वृष या तुला लग्न का शुक्र हो और इस पर शनि बुध का प्रभाव हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।
- मकर या कुम्भ लग्न का शनि हो और उस पर मंगल व गुरु की दृष्टि हो तो व्यक्ति धनी होता हैं।

उँ कोडसि कतमोडसि कस्मै त्वा काय त्वा। सुश्लेक सुमंगल सत्य राजन्।।

द्वितीय भाव और धन योग

जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में द्वितीय भाव से विशेष रूप से धन प्राप्ति का विचार किया जाता है। द्वितीय भाव को वाणी, धन, मुक्ति, ऑख, ख और परिवार के नाम से भी जाना जाता हैं। इस भाव से धन, मुख, विद्या, बचन, भोजन आदि का विचार किया जाता हैं।

1 लग्नेश द्वितीय स्थान में हों द्वितीयेश एकादश भाव में हो आयेश लग्न में हों तो धन प्राप्ति का प्रबल योग बनता हैं।

2 धनेश पंचम भाव में हों पंचमेश द्वितीय में या द्वितीयेश एकादश स्थान में हो और आयेश द्वितीय मे हो तो धनकारक योग होता हैं।

3 द्वितीयेश के साथ बुध एवं धनकारक गुरु की स्थिति से भी प्रबल धन योग होता हैं।

4 लग्नेश लग्न में हों, धनेश द्वितीय में हो एवं लाभेश लाभ स्थान में हो तो धनकारक योग बनता है।

5 धनेश लाभ में लाभेश धन भाव में या लाभ भाव में हो या दोनो केन्द्र में हो तो व्यक्ति धनवान और विख्यात होता है।

6 लग्नेश धन भाव में हो और धनेश लाभ भाव मे हों तो आनास धन प्राप्त होता है।

7 यदि द्वितीय लग्न और लाभ स्थान अपने स्वामीयों से युक्त हो तो व्यक्ति धनवान होता है।

8 लग्न में स्वराशि का सूर्य हो मंगल, गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो धनकारक योग बनता है।

9 लग्न में स्वराशि का चन्द्रमा हो मंगल गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो धनवान होता है।

10 लग्न में स्वराशि का मंगल हो चन्द्रमा, शुक्र और शनि से युक्त हो या दृष्ट हो तो धनवान योग बनता है।